International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 5, Sep.-Oct., 2024, pp: 924-929 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

‘‘बिरसा मुंडा की जीवन यात्रा तथा उनका आदिवासी समुदाय में योगदान का समाजषास्त्रीय अध्ययन’’

¼ The Life Journey of Birsa Munda and His in The Tribal Community Sociological Studies of Contribution½

सुरेन्द्र

श्रीमति गीता

1.षोध छात्र, समाजषास्त्र, राधेहरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय काषीपुर, उ0सि0नगर, उत्तराखण्ड।
2.षोध छात्र, समाजषास्त्र, राधेहरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय काषीपुर, उ0सि0नगर, उत्तराखण्ड।

Date of Submission: 14-10-2024 Date of Acceptance: 29-10-2024

सारांष – *बिरसा मुंडा एक युवा स्वतंतत्रा सेनानी, धार्मिक सुधारक और मुंडा समुदाय के नेता थे, जिनकी सकियता की भावना 19वी. सदी के अंत में लोकप्रिय हो गई। बिरसा ने उलुगान या द ग्रेट टयूमल्ट नामक आंदोलन शुरू किया। उस दौरान लोग उन्हें ‘‘**धरती अब्बा**’’ कहते थे जिसके कारण उन्हें ‘‘**धरती का पिता**’’ के नाम से संबोधित किया। इन्होंने अग्रेंजी मिशनरियों और उनकी धर्मांतरण गतिविधियों के खिलाफ एक बड़ा धार्मिक आंदोलन खड़ा किया। इन्होंने मुख्य रूप से मुंडा और ओंरावं आदिवासी समुदाय के लोगों की मदद से ईसाई मिशनरी की धार्मिक रूपांतरण गतिविधियों के खिलाफ विद्रोह किया। बिरसा मुंडा की विरासत अभी भी जीवित हैं, झारखंड और कर्नाटक में कई लोग हर साल 15 नवंबर को उनका जन्मदिन मनाते हैं। आजादी के 75वें वर्ष के अवसर पर, केंद्रीय मंत्रीमंडल ने आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों की सेवाओं को मनाने के लिए 15 नवंबर को ‘‘**जनजातीय गौरव दिवस**’’ रूप में घोषित करने की मंजूरी दी। आज भी भारत ही नही बल्कि जनजाति समुदाय बिरसा मुंडा की जयंती बड़ी धूमधाम व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं और उनके इस योगदान को भारतीय समाज प्रेरणा दायक मानता हैं। जैसा कि राष्ट्र बिरसा मुंडा जयंती मना रहा हैं, इस बात पर ध्यान देना महत्वपूर्ण हैं कि यह दिन न केवल एक प्रतीक के रूप में मनाया जाता हैं, बल्कि प्रतिरोध, साहस और स्वतंत्रता की भावना की एक शाश्वत याद के रूप में भी मनाया जाता हैं। जो नागरिक प्रेरित को भी संदेश देता हैं। भारत के लिए एक न्यायपूर्ण और समान समाज को दिशा व दशा भी प्रदान करता हैं।*

<u>मुख्य षब्द</u> – *अग्रेंजी मिशनरियों, धार्मिक आंदोलन, धर्मांतरण गतिविधियों, विद्रोह, विरासत, आदिवासी समुदाय, स्वतंत्रता सेनानियों, प्रतिरोध, साहस और स्वतंत्रता, नागरिक प्रेरित, न्यायपूर्ण और समान समाज, जनजातीय गौरव।*

प्रस्तावना – भारत के आदिवासी आंदोलनों के महान नायक मुंडा को आज भी न केवल आदिवासी लोगों के बीच बल्कि पूरे संसार में संघर्ष का नेता माना जाता हैं। धरती के पिता ‘धरती आबा’ के नाम से जाने वाले बिरसा मुंडा को आदिवासी लोगों के बीच एक देवता के रूप में पूजा जाता हैं। भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद हुए प्रसिद्ध आदिवासी विद्रोहों में बिरसा मुंडा के नेतृत्व में हुए विद्रोह का महत्वपूर्ण स्थान हैं।

बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर 1875 को रांची जिले के उलिहातु गांव में हुआ था। मुंडा रीति–रिवाजों के अनुसार गुरूवार को उनका नाम बिरसा रखा गया। बिरसा के पिता का नाम सुगना मुंडा और माता का नाम कर्मी मुंडा हातु था। उनके जन्म के बाद उनका परिवार रोजगार की खोज में उलिहातु से कुरूम्बडा आ गया, जहां उन्होंनें खेती में काम करके अपना जीवन व्यतीत किया। उसके बाद उनका परिवार फिर से काम की खोज में बंबई चला गया। बिरसा मुंडा और अन्य आदिवासी लोग खुद को वन क्षेत्रों के मूल निवासी मानते थे। बिरसा के विचारों में हमें दो मुख्य तत्व मिलते हैं जिन्होंनें बिरसा मुंडा विद्रोह को भी मार्ग देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। इनमें से पहला हैं आदिवासी समाज सुधार जिसमें मुंडा आदिवासियों को शराब नही पीनी चाहिए, अपने गांव की सफाई करनी चाहिए और जादू

टोना या अंधविश्वास में विश्वास नही करना चाहिए। दूसरा हैं ईसाई मिशनरियों, जमींदारों और साहूकारों–जमींदारों का विरोध करना शामिल था।

बिरसा मुंडा की ब्रिटिष षासन के खिलाफ पहली जंग

बिरसा पढ़ाई में बहुत ही बुद्धिजीवी थे, इसलिए लोगों ने उनके पिता से उन्हें जर्मन स्कूल में दाखिला दिलाने के लिए कहा। लेकिन ईसाई स्कूल में दाखिला लेने के लिए ईसाई धर्म अपनाना जरूरी था, इसलिए बिरसा का नाम बदलकर **बिरसा डेविड** कर दिया गया। कुछ समय अध्ययन करने के बाद उन्होनें जर्मन मिशन स्कूल को छोड़ दिया। क्योंकि साहूकारों के साथ–साथ ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों के खिलाफ बचपन से ही बिरसा के मन में विद्रोह की भावना पैदा हो रही थी। इसके बाद बिरसा ने जबरन धर्म परिवर्तन के खिलाफ लोगों को जगाया और आदिवासियों की परंपराओं को जीवित रखने के लिए कई प्रयास किए।

1 अक्टूबर 1894 को एक युवा नेता के रूप में, सभी मुंडाओं को एकत्र करके, उन्होंनें अग्रेंजों से लगान माफी के लिए आंदोलन किया। उन्हें 1895 में गिरफ्तार किया गया और हजारीबाग केंद्रीय कारागार में दो साल के कारावास की सजा सुनाई गई। लेकिन बिरसा मुंडा और उनके शिष्यों ने क्षेत्र के अकाल से पीड़ित लोगों की मदद करने की ठानी और अपने जीवनकाल में एक महान व्यक्ति का दर्जा प्राप्त किया। उन्हें उस क्षेत्र के लोगों द्वारा ''**धरती बाबा**'' के रूप में बुलाया और पूजा जाता था। उनके प्रभाव के बढ़ने के बाद पूरे क्षेत्र के मुंडा एकता के प्रति जागरूक हो गए।

बिरसा मुंडा का नारा

1895 में, बिरसा ने अग्रेंजों द्वारा थोपी गई जमींदारी व्यवस्था और राजस्व व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई के साथ–साथ जंगल भूमि का युद्ध छेड़ दिया। यह सिर्फ विद्रोह नही था। बल्कि यह आदिवासी स्वाभिमान, स्वतंत्रता और संस्कृति को बचाने का संघर्ष था। बिरसा ने '**अबुआ दिषुम अबुआ राज**' यानि '**हमारा देष, हमारा राज**' का नारा दिया। देखते ही देखते सभी आदिवासी, जंगल पर दावेदारी के लिए इकट्ठे हो गये। अंग्रेजी सरकार के पांव उखड़ने लगे और भ्रष्ट जमींदार व पूंजीवादी बिरसा के नाम से भी कांपते थे। ब्रिटिश सरकार ने बिरसा मुंडा के उलगुलान को दबाने का हर संभव प्रयास किया, लेकिन वे आदिवासियों के गुरिल्ला युद्ध के सामने विफल रहे। 1897 और 1900 के बीच आदिवासियों और अग्रेंजों के बीच लड़ाई हुई, लेकिन हर बार ब्रिटिश सरकार पीछे हट गई।

बिरसा मुंडा द्वारा विद्रोह का नेतृत्व

बिरसा ने अग्रेंजों से छुटकारा पाने के लिए मुंडा लोगों को अपना नेतृत्व प्रदान किया। 1894 में छोटानागपुर में मानसून की विफलता के कारण भंयकर अकाल और महामारी फैली। बिरसा ने पूरी निष्ठा से अपने लोगों की सेवा की। आम जनता का बिरसा में बहुत गहरा विश्वास था, इससे बिरसा को अपना प्रभाव बढ़ाने में मदद मिली। उन्हें सुनने के लिए बड़ी संख्या में लोग जुटने लगे। बिरसा ने पुराने अंधविश्वासों का खंडन किया। लोगों को हिंसा और ड्रग्स से दूर रहने की सलाह दी। उनकी बातों का असर यह हुआ कि ईसाई धर्म अपनाने वालों की संख्या तेजी से घटने लगी और जो मुंडा ईसाई बन गए थे, वे फिर से अपने पुराने धर्म की ओर लौटने लगे।

बिरसा मुंडा ने भी लोगों को किसानों का शोषण करने वाले जमींदारों के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित किया। यह भी देख ब्रिटिश सरकार ने उन्हें भीड़ जमा करने से रोक दिया। बिरसा ने कहा कि मैं अपनी जाति को अपना धर्म सिखा रहा हूं। इस पर पुलिस ने उसे गिरफ्तार करने का प्रयास किया, लेकिन ग्रामीणों ने उसे छुड़ा लिया। जल्द ही उन्हें फिर से गिरफ्तारध् कर लिया गया और दो साल के लिए हजारीबाग जेल में डाल दिया गया। बाद में उन्हें इस चेतावनी के साथ छोड़ दिया गया कि वह प्रचार नही करेगें। लेकिन बिरसा के अनुयायी कहां थे, अपनी रिहाई के बाद, उन्होंनें अपने अनुयायियों के दो समूह बनाए। एक दल मुंडा धर्म का प्रचार करने लगा तो दूसरा राजनीतिक कार्य करने लगा। नए युवको की भी भर्ती की गई हैं। इस पर सरकार ने फिर से एक बार बल द्वारा सत्ता हथियाने के उद्देश्य से आंदोलन आगे बढाया़। यूरोपीय अधिकारियों और पादरियों को हटाकर उनके स्थान पर बिरसा के नेतृत्व में एक नया राज्य स्थापित करने का निर्णय लिया गया। यह आंदोलन 24 दिसंबर 1899 ई. को शुरू हुआ। पुलिस थानों पर तीरों से हमला किया गया और आग लगा दी गई। सेना से सीधी मुठभेड़ भी हुई, लेकिन तीर कमान गोलियों का सामना नही कर पाई।

बिरसा मुंडा के साथी बड़ी सख्या में मारे गए। पैसे के लालच में बिरसा मुंडा को उनकी ही जाति के दो लोगों ने गिरफ्तार किया था।

फूक्स,स्टीवन,(1955), ने कहा कि आदिवासी असंतोष का सबसे बड़ा कारण तो आर्थिक है, देखा जाए तो अग्रेंजो ने आदिवासियों की समस्या पर कोई ध्यान नही दिया ''1।

सिहं,के.एस, (1985), जिन्होंने बिरसा मुंडा (1899–1900) आंदोलन पर अधिकृत सामग्री दी हैं, कहते हैं कि मुंडा विद्रोह की समस्या के कारण हुआ था ''2। मुंडा इस बात से परचित नही थे कि उनकी भूमि पर परंपरा से अधिकार हैं और इसका लाभ अग्रेंजी हुकूमत ने उठाया। तो वही दूसरी ओर सरकार ने जब जगंल की सुरक्षा के लिये नयी जंगल नीति अपनायी तब मुंडाओं के जंगल पर जो अधिकार थे, वो समाप्त कर दिया गया।

दोषी,एल.एस तथा जैन,पी.सी.(2020), ने अपनी पुस्तक '' **जनजातीय समाजषास्त्र** '' में मुंडा आदिवासियों ने ब्रिटिश राज की नीतियों के खिलाफ 1798 से लेकर लम्बी अवधि तक बराबर आंदोलन किए ''3। ऐसे आंदोलन भी हुए जब इन्होंनें ब्रिटिश राज के विरोध हथियार उठा लिये पर सरकार ने अपनी पूरी ताकत के साथ इन आंदोलन को दबा दिया। 1899 – 1900 में मुंडाओं का एक गंभीर आंदोलन हुआ। बिरसा का स्थान मुंडाओं में सम्मान और आदर का स्थान हैं, मुंडा इन्हें परमात्मा का स्थान मानते आ रहे हैं। यधिप ब्रिटिश सरकार ने बड़ी निर्दयतापूर्वक दबा दिया, फिर भी एक लम्बी अवधि तक मुंडाओं का आक्रोश ब्रिटिश राज के खिलाफ बना रहा।

बिरसा मुंडा के विद्रोह आंदोलन

1. यह भारत के इतिहास में स्वतंत्रता पूर्व सबसे महत्वपूर्ण आदिवासी आंदोलनों में से एक था।
2. बिरसा मुंडा ने 1899 और 1900 के बीच रांची के दक्षिण में मुंडा विद्रोही आंदोलन शुरू किया और उसका नेतृत्व किया।
3. बिरसा मुंडा ने न केवल लोगों को अपना धर्म के बारे में सिखाया बल्कि लोगों को इकट्ठा किया और ब्रिटिश शासन के खिलाफ गुरिल्ला शैली की विद्रोही सेना का गठन किया।
4. उन्होंनें अपने विद्रोही आंदोलनों के लिए ' **अबुआ राज सेटर जाना, महारानी राज टुंडू जाना** ' का नारा पेश किया। इसका अर्थ हैं ' **रानी का राज्य समाप्त हो और हमारा राज्य स्थापित हो** ''।
5. उन्होंनें लोगों से टैक्स न देने का भी आग्रह किया। इसके बाद उनके इस बयान के कारण ब्रिटिश सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और 2 साल बाद रिहा कर दिया।

मुंडा के विद्रोह आंदोलन के पीछे कारण

निम्नलिखित बिंदु बिरसा मुंडा के विद्रोह आंदोलन के पीछे के प्राथमिक कारणों का वर्णन करते हैं –

1. ब्रिटिश सरकार द्वारा शुरू की गई भूमि नीतियों ने कृषि प्रणाली की आदिवासी पारंपरिक प्रक्रिया पर हमला किया।
2. ब्रिटिश मिशनरियों द्वारा किए गए धर्म परिवर्तन ने आदिवासियों की पुरानी पारंपरिक आस्था और ईश्वर की पूजा के साथ–साथ धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं पर हमला किया।
3. ब्रिटिश सरकार ने छोटा नागपुर पठार क्षत्रे में सामंती जमींदारी प्रणाली शुरू की, जिसने **'खुंटकट्टी'** नामक स्थानीय आदिवासी कृषि प्रणाली को नष्ट कर दिया, यानी आम भूमि के मालिक स्वदेशी जनजातियों का एक समूह।
4. ब्रिटिश सरकार ने आदिवासी वन क्षेत्रों के लिए सामंती जमीदारों के रूप में **'डिकस'** नामक भूमि ठेकेदारों को भी खरीद लिया।

विद्रोह आंदोलनों द्वारा महत्वपूर्ण योगदान/उपलब्धियां

मुंडा जनजाति के प्रसिद्ध नेता बिरसा मुंडा ने '' **बिरसाईत** '' नामक एक नये धर्म की स्थापना की। वह आदिवासी समाज में सुधार लाना चाहते थे और इसलिए उन्होंनें अपने दम पर इस बिरसाईत धर्म की शुरूआत की और खुद को भगवान का दूत घोषित किया। मुंडा आदिवासी समुदाय के लोंगों ने उन्हें अपना नेता बनने की अनुमति दी। कई अन्य हिंदू, साथ ही मुसलमान, भगवान के नए दूत को देखने में रूचि रखते थे, जिसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में सभाएं हुई। बिरसा मुंडा ने आदिवासी लोंगों को मिशनरियों और मिशनी गतिविधियों को नजरअंदाज करने की सलाह दी और उनसे अपनी पुरानी पारपंरिक प्रथाओं पर लौटने का आग्रह किया।

1. 1908 में उनकी मृत्यु के 8 साल बाद, ब्रिटिश सरकार ने **'छोटानागपुर टेनेंसी एक्ट'** लागू किया।
2. यह कानून आदिवासी भूमि को गैर–आदिवासियों को हस्तांतरित करने पर रोक

लगाता हैं और मालिकों के स्वामित्व अधिकारों की रक्षा करता हैं।

3. इसके बाद, ब्रिटिश सरकार ने **'वेथ बिगारी'** प्रणाली जबरन नामक प्रथा को समाप्त कर दिया।
4. विद्रोह आंदोलनों ने ब्रिटिश राज को दिखाया कि आदिवासी समुदाय के लोगों में भी अन्याय के खिलाफ विरोध करने ओर औपनिवेशिक ब्रिटिश सरकार के खिलाफ अपना गुस्सा व्यक्त करने की क्षमता हो सकती हैं।
5. 19वी. शताब्दी के अंत में अग्रेंजो ने कुटिल नीति अपनाकर आदिवासियों को लगातार जल–जंगल–जमीन और उनके प्राकृतिक संसाधनों से बेदखल करने लगे।
6. यह सब देखकर बिरसा मुंडा विचलित हो गए और अंतत 1895 में अग्रेंजों की लागू की गयी जमींदारी प्रथा औश्र राजस्व व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई के साथ–साथ जगंल–जमीन की लड़ाई भी छेड़ दी। यह मात्र विद्रोह नही था, यह आदवासी अस्मिता, स्वायतत्ता और संस्कृति को बचाने के लिए संग्राम था।
7. आदिवासी पुनरूत्थान के लिए बिरसा मुंडा का ध्यान मुंडा समुदाय की गरीबी की ओर गया। आदिवासियों का जीवन अभावों से भरा हुआ था और इस स्थिति का फायदा मिशनरी उठाने लगे थे और आदिवासी का ईसाईत का पाठ पढ़ाते थे कुछ इतिहासकार कहते हैं कि गरीब आदिवासियों से यह कहकर बरगलाया जाता था कि तुम्हारे ऊपर जो गरीबी का प्रकोप हैं वो ईश्वर का हैं। हमारे साथ आओं हम तुम्हें भात देगें कपड़े भी देगें। उस समय बीमारी को भी ईश्वर प्रकोप से जोड़ा जाता था।

बिरसा मुंडा की विरासत

बिरसा मुंडा की विरासत अभी भी जीवित हैं और झारखंड और कर्नाटक में कई लोग हर साल 15 नवंबर को उनका जन्मदिन मनाते हैं। आजादी के 75वें वर्ष के अवसर पर, केंद्रीय मंत्रीमंडल ने आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों की सेवाओं को मनाने के लिए 15 नवंबर को " **जनजातीय गौरव दिवस** " रूप में घोषित करने की मंजूरी दी।

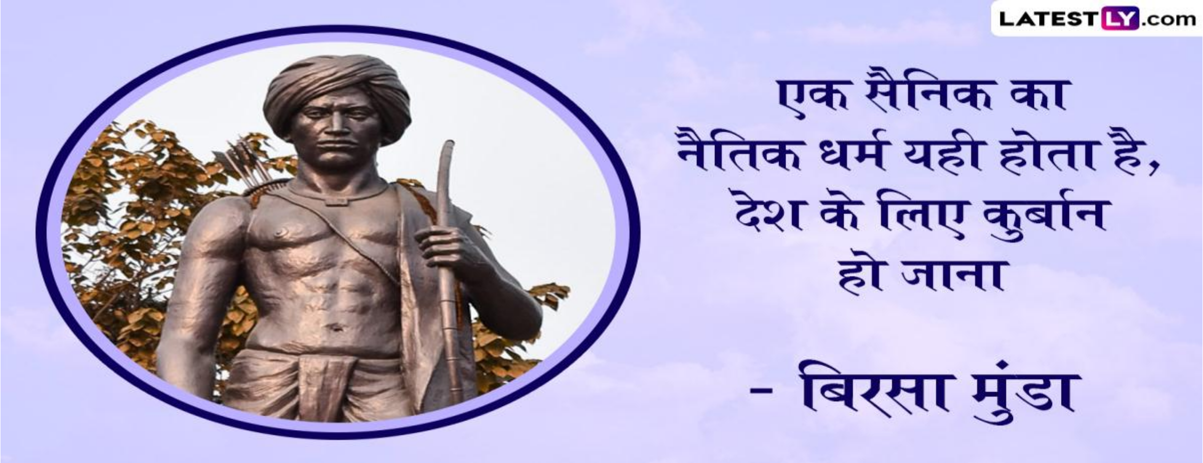

बिरसा मुंडा की उल्लेखनीय विरासतों की सूची निम्नलिखित हैं –

1. बहुत सारे संस्थानों और संगठनों का नाम उनके नाम पर रखा गया हैं, जिसमें बिरसा मुंडा एथलेटिक्स स्टेडियम, बिरसा मुंडा हवाई अड्डा, बिरसा मुंडा आदिवासी विश्वविद्यालय, बिरसा मुंडा केद्रीय जेल, बिरसा मुंडा कृषि विश्वविद्यालय आदि।
2. उपन्यास अरण्येर अधिकार (जंगल का अधिकार) 1977 में महाश्वेता देवी द्वारा भगवान के रूप में बिरसा मुंडा का जीवन यात्रा और ब्रिटिश शासन के खिलाफ उनके विद्रोह पर लिखा गया था। इस उपन्यास ने 1979 में बंगाली के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार जीता।
3. झारखंड सरकार ने बिरसा मुंडा की विरासत को याद करने के लिए 150 फुट ऊंची उलुगान प्रतिमा का प्रस्ताव रखा हैं।
4. भारत सरकार ने 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में घोषित किया हैं, जो

भगवान बिरसा मुंडा की 146वीं जयंती के साथ भी मेल खाता हैं। झारखण्ड राज्य सरकार के सहयोग से रांची के पुराने सेंट्रल जेल के स्थान पर भगवान बिरसा मुंडा आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालय बनाया गया हैं जहां महान बिरसा मुंडा अपने जीवन का बलिदान दिया था।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 15 नवंबर को देश भर में अनेक महत्वपूर्ण कार्यक्रमों, रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों, सामाजिक गतिविधियों के आयोजन के साथ–साथ भगवान मुंडा के जन्म स्थान झारखण्ड के खूंटी के उलिहातु में अनेक कार्यक्रम आयोजित करके जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाया गया। जो बहादुर आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों की स्मृति को समर्पित हैं, ताकि आने वाली पीढ़ियां देश के लिए उनके बलिदानों के बारे में जान सकें। यह तारीख बिरसा मुंडा की जयंती हैं, जिन्हें देश भर के आदिवासी समुदायों द्वारा भगवान के रूप में सम्मानित किया जाता हैं।

माननीय प्रधानमंत्री ने 15 नवंबर, 2021 को रांची में भगवान बिरसा मुंडा मेमोरियल पार्क सह स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालय का उद्घाटन किया। प्रतिष्ठित आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी भगवान बिरसा मुंडा की 146वी. जयंती के अवसर पर, प्रधानमंत्री ने देश भर में 15 से 22 नवंबर तक एक सप्ताह तक चलने वाले उत्सव का भी शुभारंभ किया।

जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर, प्रधानमंत्री ने देश के लोगों से एक साथ होकर भारत के स्वतंत्रता सग्रांम और राष्ट्र निर्माण में आदिवासी समुदायों के योगदान को सलाम करने की अपील की। माननीय नरेन्द्र मोदी ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के लिए बहादुर आदिवासी सेनानियों के अमूल्य बलिदानों को लगातार उजागर किया हैं। जिससे की इन आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों की विरासत को आगें बढ़ाएं। इस लक्ष्य के अनुसरण में, जनजातीय कार्य मंत्रालय ने अब तक 10 आदिवासी स्वतंत्रता आदिवासी सेनानी संग्रहालयों के निर्माण कों मंजूरी दी हैं। ये संग्रहालय भारत के विभिन्न राज्यों के आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों की यादों को सजोंए रखेंगें।

राज्य जनजातीय अनुसंधान संस्थानों के सहयोग से जनजातीय कार्य मत्रांलय आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को याद करने के लिए जनजातीय गौरव दिवस मनाया हैं और देश भर में सभी 27 राज्य जनजातीय अनुसंधान संस्थानों द्वारा विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं।

ये समारोह नागरिकों को शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्यिमता, रोजगार और आदिवासियों के लिए आजीविका तथा आदिवासी संस्कृति, कला और समृद्ध आदिवासी विरासत के सरंक्षण के क्षेत्र में योगदान करने के लिए प्रेरित करेंगें।

भगवान बिरसा मुंडा की 146वी. जयंती पर रांची में भगवान मुंडा मेमोरियल पार्क सह स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालय का वर्चुअल उद्घाटन करते हुए, प्रधानमंत्री ने जनजातीय गौरव दिवस के समारोहों के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा, रांची में भगवान बिरसा मुंडा आदिवासी संग्रहालय का शुभारंभ करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही हैं। झारखंड स्थापना दिवस के अवसर पर यह पहल राष्ट्र के लिए आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों और आदिवासी समुदायों के बलिदान को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उन्होंनें कहा कि भगवान बिरसा मुंडा ने अपना जीवन भारत के स्वतंत्रता संग्राम, विरासत और संस्कृति को समर्पित कर दिया। उनकी जंयती उन्हें याद और अच्छे नागरिक बनने के लिए उनके नक्शेकदम पर चलने के लिए प्रेरित करने का एक और अवसर हैं। हमारें आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों ने **"अस्मिता और आत्मनिर्भरता"** के स्तभों पर आधारित एक प्रगतिशील भारत की कल्पना की थी। मैं आप सभी से भारतीय गौरव और विरासत को बढ़ाते रहने का आग्रह करता हूं। जनजातीय संस्कृति और इतिहास को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में यह संग्रहालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

राज्यपाल श्री रमेश बैस, मुख्यमंत्री श्री हेमंत सोरेन, केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जन मुंडा और जी. किशन रेड्डी अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ झारखंड के रांची में आयोजित उद्घाटन समारोह में उपस्थित थे। शुभारंभ के बाद केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जुन मुंडा और श्री जी. किशन रेड्डी ने झारखंड में भगवान बिरसा मुंडा के जन्म स्थान को जाकर देखा। प्रधानमंत्री ने झारखंड के स्थापना दिवस पर राज्य के लोंगों को बधाई दी। बाद में, प्रधानमंत्री ने मध्य प्रदेश के भोपाल स्थित जंबोरी मैदान में आयोजित **जनजातीय गौरव दिवस** महा सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य बिरसा मुंडा की विरासत को संरक्षित करके समाज व जनजातीय समुदाय में उनके महत्वपूर्ण योगदान को संजोये रखना हैं।

निष्कर्ष

जैसा कि राष्ट्र बिरसा मुंडा जयंती मना रहा हैं, इस बात पर ध्यान देना महत्वपूर्ण हैं कि यह दिन न केवल एक प्रतीक के रूप में मनाया जाता हैं, बल्कि प्रतिरोध, साहस और स्वतंत्रता की भावना की एक शाश्वत याद के रूप में भी मनाया जाता हैं। जो नागरिक प्रेरित को भी संदेश देता हैं। भारत के लिए एक न्यायपूर्ण और समान समाज को दिशा व दशा भी प्रदान करता हैं।

बिरसा मुंडा की विरासत अभी भी जीवित हैं और झारखंड और कर्नाटक में कई लोग हर साल 15 नवंबर को उनका जन्मदिन मनाते हैं। आजादी के 75वें वर्ष के अवसर पर, केंद्रीय मंत्रीमंडल ने आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों की सेवाओं को मनाने के लिए 15 नवंबर को '' जनजातीय गौरव दिवस के '' रूप में घोषित करने की मंजूरी दी। आज भी भारत ही नही बल्कि जनजाति समुदाय बिरसा मुंडा की जयंती बड़ी धूमधाम व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं और उनके इस योगदान को भारतीय समाज प्रेरणा दायक मानता हैं।

संदर्भ–ग्रथंसूची –

1. फूक्स,स्टीवन,(1955), भारत में आदिवासियों की समस्या, आर्थिक व राजनीति संस्था, गोखल, पूना, पृ0 संख्या 12।
2. सिहं,के.एस.(1985), भारत में जनजातीय समाज, मनोहर पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृ0 संख्या. 290।
3. दोषी,एल.एस तथा जैन,पी.सी, (2020), '' जनजातीय समाजशास्त्र '' रावत पब्लिकेशंस, जयपुर, राजस्थान, पृ0 संख्या.288–289।
4. जनजातीय मत्रांलय, भारत सरकार, 2021।
5. राज्यीय जनजातीय कल्याण मंत्रालय रिपोर्ट, झारखंड 2022।
6. राज्य जनजातीय अनुसंधान संस्थान, कार्य मंत्रालय।